*Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal*

Volume 3 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

# उषा यादव रचित उपन्यासों में बाल पात्रों का चरित्र–चित्रण

**डॉ. सुशील कुमार,**
sushilkumarbizla@gmail.com

## सारांश

**मनोविज्ञान के अनुसार** – मनुष्य जन्म काल से प्रायः सोलह वर्ष की अवस्था तक बाल या बालक कहा जाता है अर्थात् वह जो जवान न हुआ हो। बाल्यावस्था को छः से 12 वर्ष तक भी माना जाता है जिसमें बालक अपने व्यक्तित्व एवं चरित्र को धारण करता है।

**मुख्य शब्द :** बाल उपन्यास, पात्र, चरित्र चित्रण।

**1. बाल का अर्थ** – बच्चे समाज का महत्त्वपूर्ण अंग है। बच्चों के अभाव में समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकार विलियम वर्ड्सवर्थ ने ठीक ही कहा है कि ''The Child is the Father of Man'' अर्थात् बच्चा इन्सान का पिता होता है।''[1] कहने का तात्पर्य यह है कि बच्चे में इंसान के सभी गुण समाहित रहते हैं जो धीरे–धीरे उसकी अवस्था के अनुसार उसमें विकसित होते हैं।

**2. बाल साहित्य का अर्थ** – बच्चों का बाल–साहित्य से सीधा सम्बन्ध होता है। बाल साहित्य जहां एक ओर बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने में सहायता प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर उसमें अच्छे संस्कार डालकर उनके भावी संसार की नींव मजबूत करता है। बच्चे अच्छे साहित्य

[1] डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, हिन्दी बाल साहित्य : विविध परिदृश्य, पृ.–47

से अनायास ही जुड़ते चले जाते हैं। बाल साहित्यकार मासूम जिंदगी का चित्रण होता है। वह अपनी रचनाओं से बालमन को नैसर्गिक आनन्द प्रदान करता है, साथ ही उसे वैश्विक धरातल पर मानव मूल्यों की ओर भी आकर्षित करता है।

शब्द की दृष्टि से जब हम बाल–साहित्य पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि बाल साहित्य के निर्माण में 'बाल' और 'साहित्य' दो शब्द अपना योगदान दे रहे हैं। वह साहित्य जो बच्चों के मन और मनोभाव को परखकर उनकी भाषा में व उनके स्तर पर लिखा गया है, वहीं सही अर्थों में बाल साहित्य है। तात्पर्य यह है कि बच्चों को रूचिकर लगने वाला, उन्हें प्रेरणा देने वाला तथा उन्हें दिशा–निर्देश देने वाला। साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर ने लिखा है कि ''बीसवीं सदी को बालकों की सदी कहा जाये तो अत्युक्ति न होगी, क्योंकि इस सदी में पहली बार वे केवल बड़ों का छोटा रूप ही माने जाते थे। बीसवीं सदी में ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में विशेषकर मनोविज्ञान के क्षेत्र में नयी खोजों के कारण इसी भ्रम का निराकरण किया।''[2] इस निराकरण के द्वारा यह स्पष्ट हुआ है कि बच्चों के लिए स्वतंत्र साहित्य होना चाहिए।

बाल साहित्य केवल बाल मनोरंजन हेतु न होकर अपितु जीवन की सच्चाइयों से रूबरू करवाने वाला है। इसका तात्पर्य यह है कि बाल साहित्यकार को बाल मन की थाह अथवा बाल मनोभावों से परिचित होना चाहिए। बच्चों के मानस पटल पर होने वाली हलचलों और उनके स्तर पर उतर कर कोई साहित्यकार रचनाएं कर सकता है।

**3. बाल साहित्य की परिभाषा –** कुछ बाल साहित्यकारों के बाल साहित्य को परिभाषाबद्ध करने का यत्न किया है। पहला जिस साहित्य से बालक का मनोरंजन हो, वही बाल साहित्य है परन्तु इस परिभाषा में अति व्याप्ति दोष है क्योंकि मनोरंजन मात्र बाल साहित्य नहीं हो सकता। दूसरा बच्चों की भावनाएं बच्चों की भाषा में जहां व्यक्त हो वही बाल साहित्य है, परन्तु इस

[2] डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन, पृ.–4

Volume 3 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

परिभाषा में अस्पष्टता और असमर्थता का दोष है क्योंकि बच्चों की भाषा का रूप स्थिर नहीं हो सकता और न ही बच्चों की भावनाएं निश्चित रूप से व्यक्त की जा सकती है। वास्तव में बाल साहित्य वह साहित्य है जो खेल–खेल में ही बालकों को समायोचित मूल्यों एवं मान्यताओं को व्यक्तित्व प्रदान करने में सहायक हो। वड्सवर्थ के मतानुसार, ''बच्चा ईश्वर का अंश लेकर संसार में प्रकट होता है किन्तु सांसारिक प्रभावों से धीरे–धीरे उसका जीवन मलिन और कुत्सित हो जाता है। यहाँ तक कि प्रौढ़ता प्राप्त करते–करते वह पूर्ण रूप से पार्थिव हो जाता है। बालकों में सच्ची शिक्षा स्कूलों में नहीं वरन् प्रकृति के साहचर्य से ही सम्भव हो सकती है।''[3]

एक अन्य विचार में पाल हेजार्ड ने कहा है, ''बच्चों की पुस्तकों में गंभीर नीतियों की बातें होती है और वे अनेक सत्यों को जीवन में शाश्वत् बनाती है जो अपनी ओर से बच्चों में सत्य और न्याय के प्रति आस्था जगाती है। इस तरह के बाल साहित्य का लेखन, लेखक से बहुत कुछ अपेक्षा करता है। सार्वलौकिक आदर्श और आध्यात्मिक मूल्यों की जानकारी, क्रियात्मक व काल्पनिक शक्तियाँ तथा सशक्त भाषामित्यक्ति।''[4]

**4. बाल साहित्य की विशेषताएं –** बच्चों की खोज, बच्चे की बदलती दृष्टि, धीमा विकास, उपदेशात्मक बनाम कल्पनाशीलता। बच्चों का बाल साहित्य से सीधा सम्बन्ध होता है। बाल साहित्य जहाँ एक ओर बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने में सहायता प्रदान करता है वहीं दूसरी ओर उनमें अच्छे संस्कार डालकर उनके भावी संसार की नींव मजबूत करता है। बाल साहित्य सम्पूर्ण बाल पीढ़ी का साहित्य होता है। प्रायः देखा गया है कि किसी भी बाल कविता की कोई पंक्ति उन्हें उस प्रकार से याद हो जाती है जैसे वह उसे पहले से ही जानता हो और उसी भाव से उन्हें अव्यक्त रूप से सदा प्रेरित करते रहते हैं। बच्चों को आरम्भ में जैसी शिक्षा दी जाती है वह आगे जीवन में वैसे ही इंसान बनते हैं। जो आज बच्चा है वही कल का भविष्य है। यदि

[3] डॉ. सुरेन्द्र विक्रम हिन्दी बाल साहित्य : विविध परिदृश्य, पृ.–462
[4] डॉ. हरिकृष्ण देवसर हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन, पृ.–4

बच्चा बचपन में अच्छा बाल साहित्य पढ़ता है तो वह जीवन में अच्छे कार्य करता है और अच्छा बाल साहित्य ही बच्चों को कुसंस्कारों से बचाकर उसका चहुँमुखी विकास करता है तथा उसके दुर्गुणों को नष्ट कर उसमें सुधार लाने की क्षमता रखता है। बच्चों में देश प्रेम, एकता, वीरता, त्याग और स्वाभिमान भरने के लिए भी बाल साहित्य बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। आज का युग विज्ञान के धरातल पर खड़ा है। अंतरिक्ष में उड़ान भरना, चांद पर पहुंचना तथा अन्य रहस्यमयी जानकारी बच्चों को केवल बाल साहित्य ही उपलब्ध कराने में सक्षम है। बाल साहित्य से बच्चों का केवल मनोरंजन ही नहीं होता बल्कि वह बच्चों के जीवन को नयी दिशा भी प्रदान करता है। अतः बाल साहित्य के द्वारा बच्चों की चंचलता को वश में करके उन्हें संसार की वस्तुओं को वे जैसी है वैसी ही देखने के लिए दृष्टि और कल्पनाएं प्रदान करने में सक्षम है।

**5. बाल पात्रों का चरित्र–चित्रण :**

अपने बाल उपन्यासों के पात्रों के चयन में भी उषा जी ने बड़ी बुद्धिमता का परिचय दिया है। डॉ. उषा यादव कृत बाल उपन्यास 'पारस पत्थर' में रवि मुख्य पात्र है। उपन्यास के प्रारम्भ में रवि के अन्दर शिष्टता का अभाव, उद्दण्डता, क्रोधी स्वभाव, ईर्ष्यालु, पढ़ाई में कमजोर आदि अनेक अवगुणों की भरमार थी। छोटी आयु में ही रवि के पिता ज्ञान प्रकाश और माता एक बस एक्सीडेंट में चल बसे थे। रवि के पालन–पोषण का दायित्व बूढ़े दादा–दादी पर आ गया था। अधिक लाड़–प्यार मिलने की वजह से वह अधिक उद्दण्ड और जिद्दी हो गया था। एक दिन जब कक्षा में काम न करने पर जब अध्यापक उससे इसका कारण पूछता है तो वह आग बरसाती निगाहों से उसकी तरफ देखता है और कहता है, ''पैन भूल आया हूँ तो आप मुझे फांसी पर लटका दोगे क्या? खामखाह बात का बतंगड़ बनाए जा रहे हैं।'' जब अध्यापक उससे कहता है, ''तुम जाहिल और कामचोर होने के साथ–साथ बदतमीज भी हो। पढ़ने में सबसे फिसड्डी, कापी–किताब लाने में हमेशा सुस्त और बेहुदगी करने में सबसे अव्वल, ऐसे लड़के को मैं अपनी

कक्षा में रहने नहीं दूंगा। गैट आउट। एक हफ्ते मेरी कक्षा में आने की जरूरत नहीं है।''[5] इस बात का उस पर कोई असर नहीं होता और वह ऐंठता हुआ बाहर चला जाता है। उसके जीवन में जैसे ही अध्यापक देवकान्त का प्रवेश हुआ, वैसे ही उसके जीवन में सभी अवगुणों के स्थान पर गुणों की भरमार हो गई। जैसे – शिष्टाचार का पालन, आज्ञाकारी होना, शान्त स्वभाव का बनना, गरीबों की मदद करना, कमजोरों की सहायता करना, छोटों के प्रति स्नेह रखना।

दीपक 'नन्हा दधीचि' उपन्यास का मुख्य पात्र है। दीपक के मन में गरीबों के प्रति दया है। यही कारण है कि जब नौकरानी रूपा अपने बीमार बच्चे के इलाज के लिए मालकिन से बीस रूपए मांग रही थी तो उसकी माँ ने कठोरतापूर्वक उसे इंकार कर दिया। इस बात का दीपक को बहुत दुःख होता है तब वह अपनी जेब खर्च के पाँच रूपए नौकरानी रूपा को देकर उसकी मदद करता है। शहर में व उसके आसपास के क्षेत्र में आई बाढ़ के लिए बने स्वयंसेवक दल का सदस्य बनकर वह दीन–दुखियों की सहायता करता है और अन्त में दूसरों की सेवा में ही अपने प्राणों को न्यौछावर कर देता है। मरणोपरान्त अपने शरीर को भी दीन–दुखियों के लिए दान कर जाता है।

'इति', 'लाखों में एक' नामक उपन्यास की मुख्य पात्र है। उपन्यास के प्रारम्भ में वह लड़की को लड़के के समान दर्जा न मिलने पर रूष्ट होती थी, पर बाद में जब उसकी सहेली की माँ उसे लड़कियों की शक्ति के विषय में बताती है तो वह उससे प्रेरित होकर जीवन में कुछ बनने के लिए तत्पर हो उठती है। लेखिका ने इति के रूप में एक ऐसी लड़की को चित्रित किया है जो अपने परिवार में सर्वाधिक उपेक्षित रही, लेकिन जिसके कारण उसके परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ी और अध्याधिक लाड़–प्यार से बिगड़कर घर से भागे भाई का पता मिला। उसके अन्दर अच्छी बातें ग्रहण करना, अत्याचार के प्रति विद्रोह करना, आत्मनिर्भर बनने की चेष्टा

[5] डॉ. उषा यादव, पारस पत्थर, पृ. 13–14

करना, तीक्ष्ण बुद्धि का होना, बहादुरी दिखाना आदि अनेक गुण उसके चरित्र में विद्यमान है और अपने इन्हीं गुणों के कारण वह अपना नाम बदलवाकर 'गरिमा' रखवा लेती है और अब उसके परिवार में लड़का–लड़की दोनों को समान दर्जा दिया जाने लगा था।

'सबक' नामक बाल उपन्यास में 'आशु' मुख्य पात्र है। आशु पशुओं और जीव–जन्तुओं के प्रति स्नेह रखता है। वह एक छोटे से पिल्ले को देखकर लालायित हो उठता है। उसे पालने के लिए घर लाकर वह उसकी खूब सेवा सुश्रुषा करता है। वह पिल्ला भी उसे प्यार करता है। आशु उसका नाम जैकी रखता है। कुछ समय पश्चात् आशु का अपने स्वाभावानुसार जैकी से मोह भंग हो जाता है। अब वह रंग–बिरंगी मछलियाँ पालना चाहता है पर यह तभी संभव हो सकता था कि जब वह जैकी को घर से बाहर निकाल दे। इसी कारण से वह जैकी को अपने दोस्त सोनू को सौंप देता है पर वह भी उसे वापिस दे जाता है। एक दिन आशु को छत पर बंदर आकर घेर लेते हैं तब जैकी अपने प्राणों की बाजी लगाकर आशु की रक्षा करता है। आशु उसकी स्वामी भक्ति को देखकर बड़ा प्रसन्न होता है और भविष्य में फिर कभी उससे छुटकारा पाने का प्रयास नहीं करता है।

**6. उषा यादव रचित उपन्यासों में बाल पात्र चरित्र–चित्रण**

**उषा यादव रचित बाल उपन्यास :**

**1. उषा यादव रचित उपन्यासों का वर्णन करना :–**

डॉ. उषा यादव द्वारा 'पारस पत्थर', 'नन्हा दधीचि', 'लाखों में एक', 'सोना की आंखें', 'सबक' और 'हीरे का मोल' बाल उपन्यासों की रचना की गई है। इन उपन्यासों के बाल पात्रों के सृजन से पता चलता है कि डॉ. उषा यादव ने बाल मन को बड़ी ही गहराई से पढ़ा है, जिसके कारण इनके उपन्यास अत्यधिक सजीव, सरल, सरस और स्पष्ट है। उपन्यासों को पढ़ते हुए पाठक अनायास ही एकाकार हो उठता है। पारस पत्थर बाल उपन्यास में उषा जी ने एक

ऐसे पारस के पत्थर के विषय में बताया है जो लोहे को अपने स्पर्श मात्र से शुद्ध स्वर्ण में परिवर्तित कर देता है। इस बाल उपन्यास में लेखिका उषा यादव ने रवि नामक एक ऐसे उद्दण्डी नामक सेवानिवृत्त अध्यापक के सानिध्य में आकर आज्ञाकारी और कर्त्तव्यपरायण इंसान बन जाता है। इस उपन्यास को तेरह भागों में बांटा गया है। पन्द्रह वर्षीय रवि माँ–बाप के अभाव में दादा–दादी द्वारा अत्याधिक लाड़–प्यार द्वारा पाले–पोसे जाने के कारण जिद्दी और उद्दण्ड हो जाता है। दादी उसका जन्मदिन मनाने के लिए कहती है, पर वह अपने मन में फिल्मी तरीके से जन्मदिन मनाने की कल्पना किये रहता है जोकि वह चलचित्रों में देख चुका है। अपनी बूढ़ी दादी पर झुंझलाते हुए कहता है "आप लोग हर साल इतने सड़ियल तरीके से मेरा जन्मदिन मनाते हैं कि मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगता है। सवेरे घर में हवन करवा दिया, दोपहर में अनाथालय के बच्चों को भरपेट भोजन खिला दिया और शाम को मुझे रोली का टीका करके कोई उपहार दे दिया। बस हो गया जन्मदिन। वैसे तो आपको समझाना बहुत मुश्किल है, क्योंकि आप फिल्में आदि नहीं देखती हैं, फिर भी आप इतना समझ लीजिए कि मैं बिल्कुल उसी तरह का धूम–धड़ाका करना चाहता हूँ। गुब्बारे, झण्डियां और बिजली की बत्तियों से चमाचम सजा हुआ हॉल। एक बड़ी मेज पर केक और मोमबत्तियां शाम को मेरे सारे दोस्त आयें। जब मैं केक काटूं और फूक मारकर मोमबत्तियां बुझाऊँ, तो वे हैप्पी बर्थडे टू यू रवि गाये। उसके बाद एक जोरदार पार्टी और तब कार्यक्रम खत्म।"[6] दादा–दादी उसकी बकात को स्वीकार कर लेते हैं। पार्टी खत्म होने के पश्चात् वह बड़े ही अनमने ढंग से दादा–दादी के पैर छूकर सोने चला जाता है। अध्यापक देवकांत बचपन में रवि के पिता ज्ञान प्रकाश को पढ़ाया करते थे। उनके सम्मुख दादा जी रवि की समस्या रखते हैं। दशहरे की छुट्टियों के उपलक्ष्य में अध्यापक रवि को अपने साथ गांव ले जाते हैं। ट्रेन में सफर करते वक्त दैनिक यात्रियों द्वारा किए जाने वाले दुर्व्यवहार को देखकर रवि आग–बबूला हो उठता है। रवि के क्रोध को देखकर अध्यापक

[6] डॉ. उषा यादव, पारस पत्थर, पृ.–4

उससे कहता है कि वह अपने गुस्से को अन्याय, दुराचार आदि पर प्रकट करें न कि कमजोर और निरीह लोगों पर उतारें। गांव में रवि दीना कुम्हार के खिलौनों को रंगकर बड़ा ही अच्छा कार्य करता है। हाथ की सफाई के बलबूते पर उसने मशीनी गति से इतने सुन्दर खिलौने रंगे कि उन्हें देखकर दीना खुशी से पागल हो उठा और गदगद् कण्ठ से कहने लगा ''मैं तो कहूं डूबते हाथों को बचाने के लिए साच्छात भगवान आये हैं।''[7]

**नन्हा दधीचि :—** बाल उपन्यास में लेखिका उषा यादव ने एक ऐसे बालक दीपक का चरित्रांकन किया है जो सदैव दूसरों की मदद के लिए तत्पर रहता है। प्रस्तुत बाल उपन्यास के आरम्भ में नौकरानी रूपा को बीस रूपए के लिए माँ के सम्मुख गिड़गिड़ाते हुए देखकर दीपक को बड़ा अजीब लगता है। वह अपने बीमार बच्चे के ईलाज के लिए माँ से पैसे मांग रही थी लेकिन माँ पर उसकी फरियाद का कोई असर नहीं होता। बाद में दीपक अपनी जेब खर्ची से रूपा की मदद करता है और उससे कहता है कि तुम पहले अपने पुत्र का इलाज करवाओ, जब तक वह ठीक न हो जाये, तुम्हें काम पर भी नहीं आना चाहिए। मैं माँ से कह दूंगा तुम्हारे हिस्से का कार्य घर के और नौकर कर लेंगे। उसकी ऐसी बातें सुनकर रूपा गदगद होकर कहती है ''आपके मन में कितनी दया है राजा भैया, भगवान करें कि आप बड़े होकर भी गरीबों के लिए इतने ही दयालु बने रहें पर आपको हम लोगों के दु:ख दर्द की बात नहीं सोचनी चाहिए। आप अभी छोटे हैं सिर्फ अपनी पढ़ाई—लिखाई और अपने खेलकूद पर ध्यान दीजिए।''[8] पर वह किसी की कुछ बात नहीं मानता और उसे अपना पाँच का नोट देकर भाग जाता है। एक बार नगर में भारी वर्षा की वजह से बाढ़ आ जाती है जिसमें अनेक गांव बर्बाद हो जाते हैं। बाढ़ पीड़ितो की सेवा के लिए स्थापित स्वयं सेवक दल में दीपक भर्ती हो जाता है और दिन—रात बाढ़ पीड़ितों की मदद करता है। यहां सब दीपक की सेवा भक्ति से बहुत प्रभावित

[7] डॉ. उषा यादव, पारस पत्थर, पृ.—57 (चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा वर्ष 1990)
[8] डॉ. उषा यादव, नन्हा दधीचि, पृ.—8

होते हैं। बाढ़ शिविर में एक वृद्ध महिला दीपक की गोद में दम तोड़ देती है। वह मरने से पहले दीपक को अपना छोटा—सा पोता सौंप जाती है जिसके दोनों गुर्दे खराब थे। दीपक इन गरीबों की मदद हेतु अपने पिता के गीतकार और संगीतकार दोस्त प्रदीप का एक शो नगर में करवाता है। इस शो के आयोजन को सफल बनाने के कार्यों के दौरान एक दिन दीपक दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है और मौत के द्वार पर आन खड़ा होता है। अपनी गंभीर हालत में वह अपने पिता से अपनी अंतिम इच्छा पूरी करने की मांग करता हुआ कहता है कि मैंने इस शरीर को बड़े प्यार और मेहनत से पाता है, मैं इसका ज्यादा से ज्यादा फायदा उठाना चाहता हूँ। मैं नहीं चाहता कि मेरा शरीर जलकर राख हो जाए। मेरा गुर्दा रूपा को, आँखे निधि को आदि।

एक तेरह—चौदह वर्ष का नन्हा बालक सारी उम्र दूसरों के लिए जिया। मरणोपरांत उसके शरीर के अंगो का प्रत्यारोपण जरूरत मंद लोगों मकें किया गया। वह वास्तव में नन्हा दधीचि था, जिसने अपने शरीर को भी परोपकार में लगा दिया था।

**लाखों में एक –** समीक्षक डॉ. रामदयाल मैदुली के अनुसार ''लाखों में एक'' उपन्यास की कहानी आम घरों की हैं, जहां लड़कियों को हेय और लड़कों को कुलदीपक माना जाता है। भले ही वे अपने खानदान की नाक कटा रहे हो। लेखिक ने 'इति' के रूप में एक ऐसी लड़की का चित्रण किया है जो अपने परिवार में सर्वाधिक उपेक्षित रही, लेकिन जिसके कारण उसके परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ी और अत्याधिक लाड़—प्यार से बिगड़कर घर से भागे भाई का पता मिला। कहानी में रोजमर्रा की घटनाओं को अत्याधिक भावपूर्ण ढ़ंग से दर्शाया गया है। एक बार प्रारम्भ करके कहानी की समाप्ति पर ही पुस्तक हाथ से छुटती है।''[9] इस बाल उपन्यास में लेखिक ने हीरालाल नामक एक कर्मचारी के परिवार के विषय में बताया है जिसमें वह स्वयं उसकी पत्नी, माँ, पाँच बेटियां व एक बेटा है। इस परिवार में 'इति' पांचवे नम्बर की लड़की है। एक दिन

[9] डॉ. रामदयाल मैदुली, योजना पत्रिका, समीक्षक, अंक अक्टूबर 1993।

शाम को माँ द्वारा इति की काफी पिटाई की गई। कारण यह था कि गीता और रूपा दोनों अचार चुराने के बहाने रसोई में घुसी थी और उन्होंने रसोई का दरवाजा खुला छोड़ दिया और बिल्ली आकर सारा दूध पी गई। उस दिन शरद पूर्णिमा थी और शाम को खीर बनाने का प्रोग्राम था। भगौना भरे दूध का नुकसान देखकर माँ गुस्से से पागल हो उठा। पाँचों बेटियों को बुलाकर पूछा तो गीता और रूपा ने अपनी गलती न बताकर सारा आरोप इति के सिर पर डाल दिया, इसी कारण उसकी उस दिन काफी पिटाई हुई थी। दो दिन पश्चात् फिर वैसी ही एक घटना घटी। माँ के ड्रैसिंग टेबल से अचानक उनकी लिपिस्टिक गायब हो गई। आज फिर गीता, रूपा और दीपा तीनों बहनों ने मिलकर छोटी बहन इति पर चोरी का इल्जाम लगा दिया और वह रोती हुई बार–बार मर जाने के लिए सोचती है। ''इधर इति रो रही थी, उधर वे तीनों शरारती बहनें मन ही मन मुस्करा रही थी। उन तीनों में गहरी छनती थी। तीनों मिलकर छत पर बने कमरे में दोपहर को नाच गाना करती थी। उसी समय सजने संवरने के लिए उन्होंने माँ की लिपिस्टिक चुराई थी। उन्होंने पहले ही सोच लिया था कि माँ के पूछने पर इति का नाम लगा देंगे। इसलिए वे सब खुश थी। उनकी योजना सफल हुई थी।''[10]

**सबक :–** बाल उपन्यास 'सबक' के कथानक के देवेश अंकल की कुतिया द्वारा चार पिल्ले दिए गये। उनमें से एक सफेद झबरू बालों वाला पिल्ला आशु को बड़ा पसन्द आता है और वह उसे उनसे मांग लेता है तथा उसका नाम जैकी रखता है। देवेश अंकल आशु को कहते हैं कि कुत्ते को पालना बेहद कठिन कार्य है। घर लोकर वह जैकी की ऐसी खातिरदारी करता है जैसी आज तक उसने अपने किसी भी दोस्त की नहीं की थी। आशु अपनी माँ से छिपाकर सुबह नाश्ते में से अपनी प्लेट के उबले अण्डों में से जैकी का आधा हिस्सा पहले निकाल देता था। अगर उसकी माँ उसे ऐसा करता देख लेती तो वह कहती कि तुम अपना नाश्ता खुद करो। मैं जैकी को पहले ही दे चुकी हूँ। आशु के स्कूल जाते वक्त जैकी आशु को माँ के साथ दरवाजे

[10] डॉ. उषा यादव, लाखों में एक, पृ.–16

तक छोड़ने जाता था और वह सारे दिन उसके इंतजार में इधर–उधर घर में चक्कर लगाता रहता था। कभी–कभी माँ भी उस पर झुंझला उठती थी और कहती कि एक तो अपने ही काम नहीं निपटते हैं, उस पर एक जंजाल और उठा लाये तुम। आशु की जैकी के प्रति सेवादारी इस प्रकार से स्पष्ट है – ''मम्मी की डाँट खकर जैकी सहमत जाता था। उसे हर दिन डर लगता था कि कहीं मम्मी ऊबकर उसके प्यारे जैकी को घर से न भगा दे। सुबह शाम उसे बाहर घूमाने की ड्यूटी भी मुस्तैदी से निभाता था। भूल से किसी दिन घुमाना रह जाये और जैकी महाशय कमरे को पवित्र कर दे तो उसकी जान निकलने लगती थी। ऐसे में कहीं दादी की निगाह पड़ गई तो थू–थू। करके आसमान सिर पर उठा लेती थी। पापा भी तब ऐंठ दिखाने से चूकते नहीं थे, फौरन नादिरशाही हुक्म सुना देते, ''आशु, तुम्हारी ही वजह से यह कुत्ता घर आया है, झटपट कमरे को साफ करो तुम।''[11]

एक दिन आशु को छत पर बन्दरों में चारें तरफ से घेर लिया था तो एकमात्र जैकी ने ही बन्दरों से फेंट ली और पुनः हमला करने पर भी वह अपनी जान की बाजी लगाकर बन्दरों से उलझ पड़ा और उसकी जान बचाई। अब आशु जैकी की वफादारी को समझ गया और उसका इलाज माँ से करवाने को कहा क्योंकि वह अब उसे किसी कीमत पर भी खोना नहीं चाहता था। ऐसे में हम देखते हैं कि बाल साहित्य ही है जो पाठ्य पुस्तकों से इन बच्चों को खेल–खेल में बहुत सारी अवधारणाओं के प्रति समझ बढ़ाने में सहायक होता है।

## 7. उषा यादव के उपन्यास बाल साहित्य की श्रेणी में आते हैं या नहीं :

वही साहित्य बाल साहित्य कहलाने का वास्तविक अधिकारी होता है जो बालकों के कोमल मन की अतरंगी दुनिया के सुहावने स्वप्नों, सुमधुर भावनाओं, चंचल क्रीड़ाओं, निश्छल आकांक्षाओं, ऊर्जस्वित उमंगों को भली भांति समझ और समझा सके। बालमन एक ऐसा विचित्र

[11] डॉ. उषा यादव, सबक, पृ–6

लोक होता है जिसमें यथार्थ एवं कल्पना में कोई विशेष अंतर नहीं होता। उस विचित्र लोक को वही जान सकता है जिसे बाल मनोविज्ञान की तात्त्विक एवं वास्तविक समझ हो। बालकों के मन की तरंगों को अनुभव कर उन्हें शब्दों के माध्यम से चित्रित करना एक विशिष्ट कला है। उषा यादव न केवल उन तरंगों को अनुभव करती हैं अपितु बातों–बातों में उन्हें संस्कृति, सभ्यता, सदाचार, स्फूर्ति, जीवटता, कर्मठता, मानवीयता, मनोरंजन एवं सहज शिक्षाप्रद अमृत–बिंदुओं से रससिक्त कर एक निर्मल धारा में परिवर्तित करती चलती हैं। उषा यादव का साहित्य बालमन को समीचीन आकार एवं सकारात्मक दिशा प्रदान करने में पूर्णतया समर्थ है।

**निष्कर्ष :** बाल साहित्य बाल गंतव्य की सीढ़ी है। जिस पर चढ़कर बाल कल्याण अपने गंतव्य स्थान तक पहुंचता है। बिना बाल साहित्य के बाल कल्याण की कल्पना तक नहीं की जा सकती है। अतः जब तक हमारे पास स्वस्थ बाल साहित्य नहीं होगा, तब तक बाल कल्याण की बात करना हवा में तीर चलाना होगा। जिस प्रकार एक बीज में पूरा वृक्ष समाहित होता है, उसी प्रकार बाल साहित्य में बाल कल्याण समाहित रहता है। डॉ. उषा यादव बाल मन की पारखी है। बाल मन के मनोभावों को आत्मसात किये बिना इसको लिखना सम्भव नहीं है। बच्चों को लिखने के लिए बच्चों जैसा ही बनना पड़ता है और डॉ. उषा यादव जी इस कला से भली भांति परिचित है। उनका बाल साहित्य रचना में ध्येय बच्चों के लिए मनोरंजक साहित्य रचना ही नहीं अपितु उसके साथ–साथ वर्तमान में बच्चों के अन्दर नैतिकता और मानवता के आदर्शों का जो अभाव होता जा रहा है यह देखकर उन्हें बेहर निराशा महसूस हुई और उस पर काफी चिन्तन करने के पश्चात् उन्होंने बाल साहित्य की रचना भी प्रारम्भ कर दी। उन्होंने बाल मनोविज्ञान को समझा, उसे अपने साहित्य–सृजन का विषय बनाया जिसके माध्यम से लेखिका उषा यादव ने कथा साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की। अतः स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है कि लेखिका डॉ. उषा यादव विशिष्ट साहित्यिक प्रतिभा की धनी है।

**सन्दर्भ सूची :–**

1. डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, हिन्दी बाल साहित्य : विविध परिदृश्य, पृ.–47
2. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन, पृ.–4
3. डॉ. सुरेन्द्र विक्रम हिन्दी बाल साहित्य : विविध परिदृश्य, पृ.–462
4. डॉ. हरिकृष्ण देवसर हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन, पृ.–4
5. डॉ. उषा यादव, पारस पत्थर, पृ. 13–14
6. डॉ. उषा यादव, पारस पत्थर, पृ.–4
7. डॉ. उषा यादव, पारस पत्थर, पृ.–57 (चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा वर्ष 1990)
8. डॉ. उषा यादव, नन्हा दधीचि, पृ.–8
9. डॉ. रामदयाल मैदुली, योजना पत्रिका, समीक्षक, अंक अक्टूबर 1993।
10. डॉ. उषा यादव, लाखों में एक, पृ.–16
11. डॉ. उषा यादव, सबक, पृ–6